श्रीमती शान्ति मैत्रेय पत्नी श्री सियाराम मैत्रेय

दो शब्द

मेरा विश्वास है कि संसार में जो भी घट रहा है, वह परमपिता, ईश्वर की इच्छा के अनुसार ही हो रहा है।

विद्यालीय जीवन से लेकर विश्वविद्यालय में अध्ययन के समय तक व्यस्त रहा। राज सेवा काल में और व्यस्तता बढ़ी, सेवानिवृत्त होते ही सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं में समय देने के कारण और अधिक व्यस्त हो गया।

मेरी सुपुत्री और सुपुत्रों ने अनेक बार जीवन के संस्मरण और निज के सम्बन्ध में जिज्ञासा की पर समय न निकाल सका।

दो वर्ष पूर्व धर्मपत्नी श्रीमती शान्ति मैत्रेय भी स्वर्ग सिधार गई; फलस्वरूप कुछ अकेलेपन की अनुभूति हुई। समय के सद्उपयोग के लिये कुछ लिखना आरम्भ किया। अब दृष्टि दुर्बल हो रही है और कान ऊँचा सुनते हैं।

अत: विचार हुआ कि जो लिखा है, उसे पुस्तक का रूप देकर सभी की जिज्ञासा शान्त की जाये। मेरे घनिष्ठ मित्र और यशस्वी साहित्यकार मनु शर्मा जी ने पुरोवाक लिखकर, अनुग्रह कर मुझे ऋणी बना दिया है।

भगवान शंकर मुझे वह योग्यता और क्षमता दें जिससे उन्होंने जो मेरे विषय में व्यक्त किये हैं, उनके अनुरूप बन सकूं।

मेरे परिवार के सदस्यों और मित्रों ने भरपूर सहयोग दिया है, अत: मेरा आभार उनके लिये भी है।

श्री रोहित दबे और उनकी सुयोग्य सुपुत्री कुमारी शीतल दबे ने अपने सशक्त कंधों पर मुद्रण तक जो आत्मीय सहयोग का भार लिया उनको भी मेरा कोटिश: धन्यवाद।

(सियाराम मैत्रेय)

पुरोवाक्

'अनुभव' की हर पंक्ति से गुजरता हुआ, मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि एक कर्मठ, ईमानदार और राष्ट्रभक्त की कलम से प्रणीत इस पुस्तक में अनुभव की गहराई है कर्म के प्रति परम आस्था है और है आत्मविश्वास की गगनचुम्ब ऊँचाई। सच्चे गांधीवादी की तरह लेखक ने जीवन के अनेक क्षेत्रों में सत्य के साथ अनेक प्रयोग किये हैं। उन्हीं का परिणाम है यह पुस्तक।

यह संस्मरणों की सिलसिलेवार पुस्तक नहीं है। पुस्तक के.... अध्याय हैं- सभी एक दूसरे से भिन्न, सभी एक दूसरे से अलग। यदि कोई वस्तु सभी को जोड़ती है तो वह है, एक कर्मठ, ईमानदार, राष्ट्रभक्त और प्रयोगधर्मी लेखक का निस्पृह व्यक्तित्व। उसकी समाजसेवा अपने से परे है, पर सबके लिए है। वह कहीं जेल अधीक्षक की और उपमहानिरीक्षक (कारागार) हैसित से अविश्वास के वातावरण में विश्वास बांटता है और घोर अपराधीवृत्तियों के खेत में प्रेम, सहयोग और सहकार के बीज बोता है। कहीं स्वतंत्रता सेनानी के रूप में अपने सहयोगियों की हिम्मत, दिलेरी, त्याग और राष्ट्र के प्रति उनके समर्पण की बड़ी आत्मीय और भावपूर्ण कहानी कहता है।

प्रथम अध्याय में आज की व्यवस्था से असन्तुष्ट एक नितान्त राष्ट्रभक्त के स्वनिल सरकारी तंत्र का प्रारूप प्रस्तुत किया गया है, जो आज आपको व्यावहारिक भले ही न लगे, पर विचारणीय अवश्य है। सोचिए, क्या ऐसा हो सकता है? यदि होता तो कितना अच्छा होता। यह (Eldoredo) स्वर्ग क्या धरती पर उतर सकता है? यदि उतरता तो कितना अच्छा होता।

इसकी लेखकीय भूमिका हमारे वैदिक ऋषियों के दर्शन के मात्र एक अंश की संक्षिप्त मीमांसा करती है और उस सत्य की व्याख्या करती है जिसके द्वारा अणुतो अक्षरियान, महतो महीयान तथा अनन्त अव्यक्त और अक्षर तत्व विभिन्न रूप लेता है। फिर वह बताता है कि हमारे प्राचीन काल निर्णय की विधि और वास्तविकता क्या थी।

इस ज्ञान-गरिमायुक्त व्याख्या को पढ़ने से ऐसा लगता है कि एक गम्भीर शोध प्रबन्ध सिमिटकर शोध निबन्ध हो गया है। यदि मैं यह कहूँ कि यह शोध निबन्ध पुस्तक के अन्य निबन्धों के मनोभाव से हटकर है, तो शायद भूल नहीं होगी। केवल 'मैत्रेय' गोत्र की उत्पत्ति की तलाश ही पुस्तक से अपनी प्रांसगिकता स्थापित कर पाती है।

अगला अध्याय लेखक के जीवन और उसके कर्तव्य पर आधृत है जिसकी आत्मीय शैली ने उसे एक आत्मकथा का रूप दे दिया है। आचार्य कुल, उत्तर प्रदेश के अध्यक्ष के रूप में लेखक ने 'शान्ति के लिए शिक्षा कैसी हो?'- इस पर विस्तार से विचार किया है और यह बताने का इसमें सार्थक प्रयत्न है, कि इस अल्प शिक्षित देश में किस शिक्षा व्यवस्था द्वारा लोगों को शिक्षित बनाया जा सकता है।

खादी की उपयोगिता पर भी लेखक गम्भीरता से चिन्तन करता है और इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि विकासशील देशों की अग्रणी पंक्ति में होते हुए भी इस देश के आर्थिक विकास में खादी का कितना महत्व है। साथ ही वह यह भी अनुभव करता है, कि यह राष्ट्र जब तक यह नहीं स्वीकार करेगा, कि खादी हमारे आर्थिक तंत्र का आधार ही नहीं, हमारा जीवन दर्शन भी है, तब तक इसकी अस्मिता खतरे में रहेगी।

इन सभी दृष्टियों से यह एक अच्छी संग्रहणीय पुस्तक है। लेखक साधुवाद का पात्र है। निश्चित रूप से हिन्दी संसार इस रचना का स्वागत करेगा।

(मनु शर्मा)

अपनी
जन्म नगरी
रुड़की
को समर्पित

जननी जन्मभूमिश्च
स्वर्गादपि गरीयसि

रुड़की, रुड़े नाम के वैश्य जमींदार ने बसाया था। डेढ़ सौ बरस पहले का छोटा सा गाँव रुड़की एक भरा पूरा शहर बनने के साथ ही अपने मूल चरित्र को खो बैठा। खुशगवार मौसम, शहर के बीच से बहती गंगनहर, छितराई आबादी, कैंट और विश्वविद्यालय के साथ गंगनहर के पश्चिमी किनारे की आबादी का गया-गुजरा कस्बाई माहौल भी शहर का हिस्सा है।

रुड़की के पास गर्व करने लायक अपना अतीत है। विश्व मानचित्र में इस शहर को सैकड़ों बरसों से पहचान हासिल है। पढ़े-लिखे लोगों के लिहाज से रुड़की का पश्चिम उत्तर प्रदेश में विशेष स्थान है। अभी साफ सुथरे शहरों में भी इसकी गिनती हो रही है, पर वास्तव में ये खूबियां रुड़की शहर की नहीं वरन् गंगनहर के किनारे बसे शहर के पूर्वी इलाके की हैं। शहर के बीच से बहती गंगनहर जैसे आम आदमी और आभिजात्य वर्ग के बीच की विभाजक रेखा बन गई है।

रुड़की का इतिहास वैसे तो कई साल पुराना है, लेकिन डेढ़ सौ साल पहले तक रुड़की तमाम उलट फेरों के बावजूद एक गांव ही बना रहा। करीब एक हजार वर्ग हेक्टेयर में फैला यह शहर सुहावने मौसम के लिये भी जाना जाता है। यहां सर्दियों का औसत तापमान

करीब चौदह डिग्री और गर्मियों का औसत तापमान करीब 32 डिग्री सेल्सियक रहता है। असिलियत में रुड़की का निर्माण और विकास गंगनहर बनाए जाने की योजना के साथ ही शुरु होता है। उक्त वर्ष रुड़की के गौरवशाली इतिहास का शुरुआती बिन्दु भी है। इसके बाद रुड़की में वह सब कुछ स्थापित हुआ जिस पर आज भी देश गर्व कर सकता है।

सन् 1847 में रुड़की की आबादी सहज साढ़े पांच हजार थी। इसके बाद के सौ वर्षों में इस शहर की आबादी बमुश्किल बीस हजार तक पहुंच सकी। आजादी के वक्त बीस हजार की आबादी का रुड़की अब एक लाख से अधिक का आंकड़ा पार कर गया है। इस आबादी में मोहनपुरा, रामपुर, खंजरपुर, सुनेहरा, सफीपुर, ढंडेरा आदि गांवों की आबादी शामिल नहीं हैं, जबकि ये गांव पूरी तरह शहर की सीमाओं में आ चुके हैं। इसी तरह कई कालोनियां भी रुड़की का हिस्सा बनने की बाट में हैं। इन स्थानों को अगर मिलाकर देखें तो यहां की आबादी डेढ़ लाख से भी ऊपर पहुंच जाएगी। इस तरह डेढ़ सौ साल में रुड़की की आबादी करीब 27 गुना हो चुकी है। रुड़की की मूल आबादी में तीन चौथाई लोग पढ़े लिखे हैं।

नहर के निर्माण के साथ रुड़की शहर का विकास भी बेहद तेजी के साथ हुआ। आगरा के लेफ्टिनेंट गवर्नर जेम्स थामसन की बदौलत रुड़की को इंजीनियरिंग कालेज मिला जो अब विश्व के जाने माने विश्वविद्यालयों में से एक है। यह वर्ष विश्वविद्यालय का डेढ़ सौवां वर्ष चल रहा है। गंगनहर के निर्माण में जुटे लोगों को प्रशिक्षित करना इस कालेज की स्थापना के उद्देश्यों में शामिल था। गंगनहर के अन्य कार्यों को अंजाम देने के लिए ही सन् 1843 में रुड़की वर्कशाप की स्थापना हुई। वर्ष 1852 में यह एक सुव्यवस्थित फैक्ट्री के रूप में जानी जाने लगी। 1848 में नगर का मुख्य बाजार बना और इसके तीन साल बाद तहसील व स्कूल की स्थापना हुई। वर्ष 52 में रुड़की में पहला चर्च बना तथा इसके अगले वर्ष यहां बंगाल सैपर्स की स्थापना हुई। 1855 में पुरानी तहसील एरिया का योजनाबद्ध विकास शुरु हुआ।

वर्ष 1857 रुड़की क्षेत्र की पत्रकारिता के लिए ऐतिहासिक वर्ष है। इस सन् में कर्नल बेयर्ड स्मिथ ने इलाके का पहला अखबार रुड़की गैरीसन गजट नाम से निकला। हालांकि 140 साल पुराने इस अखबार के बारे में अब अधिक जानकारी नहीं मिलती। वर्ष 59-60 भी रुड़की के लिए काफी महत्वपूर्ण रहे। इन वर्षों में यहां ब्रिटिश सेना पहुंची और कैंटोनमैंट मजिस्ट्रेट ने बैठना शुरु किया। वर्ष 66 में रुड़की को पहला पोस्ट आफिस मिला और सन् 78 में खुद स्वामी दयानन्द ने यहां आर्य समाज की स्थापना की। अंग्रेजों के लिए यह पूरा इलाका काफी महत्वपूर्ण हो चुका था। इसीलिए उन्होंने सन् 79 में रुड़की को नगर पालिका क्षेत्र भी घोषित करा दिया। एक सौ ग्यारह साल पहले पहली जनवरी को ट्रेन यहां पहुंची।

पंडित यमुना दत्त को नगर का पहला हिन्दी अखबार निकालने को श्रेय जाता है। उन्होंने 'धर्म प्रकाश' नाम से साप्ताहिक अखबार शुरु किया था। वर्ष 96 में रुड़की को उप जिला क्षेत्र का दर्जा दिया गया और यहां ज्वाइंट मजिस्ट्रेट ने बैठना शुरु किया। इस समय रुड़की प्रदेश के सबसे पुराने उपजिला क्षेत्रों में से एक है। इससे पहले यह ज्वालापुर तहसील का हिस्सा हुआ करता था। इसके बाद के बीस सालों में मंथर गति से नगर का विकास होता रहा।

* * *

सूची

अध्याय			पृष्ठ
1.	भारत की वर्तमान दुर्दशा- कारण और निवारण	-	1-05
2.	ऋषि मैत्रेय	-	6-21
3.	संक्षिप्त जीवन वृत्त और कृतित्व	-	22-37
4.	शान्ति के लिए शिक्षा	-	38-46
5.	कुछ पुरानी यादें	-	47-70
6.	भाई भगवत जी	-	71-76
7.	खादी क्यों?	-	77-86
8.	जेलों में स्काउटिंङ्ग- एक अभिनव प्रयोग	-	87-100
9.	स्नेहमयी माता जी शांति शर्मा	-	101-104
10.	ममतामयी आदर्श सास श्रीमती शान्ति मैत्रेय	-	105-108

भारत की वर्तमान दुर्दशा

कारण और निवारण

संसार के सभी देश यह जानते और मानते हैं कि भारत एक सबसे बड़ा लोकतंत्र अर्थात् जनतंत्र है। भारत के प्रबुद्ध नागरिक यह भी भली प्रकार जानते और समझते हैं कि यह भीतर से खोखला होता जा रहा है। वह इस कल्पना से दुःखी हैं कि एक समृद्ध और सुखी नागरिकों का संसार का सरताज होने वाला देश तीव्र गति से भ्रष्टाचार के पंजे में फंसता जा रहा है। केवल सत्ता के लोलुप लोग स्वार्थ के वशीभूत अन्धे हो रहे हैं।

इस सत्य से कोई आँख नहीं मूंद सकता कि प्रत्येक राष्ट्र अपने नागरिकों को सुखी व समृद्ध देखना चाहता है। केवल भारतीय संस्कृति ही ऐसी है जहां अपने देश के नागरिकों के लिये ही नहीं अपितु संसार के समस्त नागरिकों के लिये सुख-समृद्धि की कामना करते हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् हमारी भावना है, यही लक्ष्य भी है।

इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिये ही राष्ट्र और समाज की कल्पना की गई है। व्यवस्था के लिये नियम निर्धारित किये जाते हैं। उन नियमों का पालन ही सबका कर्त्तव्य है। यह नियम ही किसी राष्ट्र के संविधान का रूप लेते हैं। यदि शासन करने और शासन का मार्ग-दर्शन करने से ही इन नियमों का उल्लंघन कर स्वार्थ में डूब जायें तो स्थिति भयावह होगी, यह निश्चित है।

भारत की वर्तमान में यही दशा है। यहां मंत्री से लेकर संतरी तक आकण्ठ भ्रष्टाचार में डूबे हैं। जन साधारण त्राहि-त्राहि कर रहा है।

राजनैतिक स्वतंत्रता प्राप्त कर देश में सबसे बड़ा कार्य संविधान निर्माण का ही था, जिसके लिये योग्यतम व्यक्तियों की परिषद गठित की गई थी। परिषद के सचिव के रूप में डा० भीमराव अम्बेडकर ने उसे लिपिबद्ध किया था। डा० राधाकृष्णन जैसे दार्शनिक विद्वान, डा० राजेन्द्र प्रसाद जैसे विवेकशील न्यायविद तथा पं० जवाहर लाल नेहरू जैसे तथा आचार्य नेरन्द्र देव सरीखे समाजवादी के परिश्रम स्वरूप हमें संविधान मिला।

कहावत है मनुष्य ही भूल करता है। उस समय सबसे बड़ी भूल यह हुई कि हमने अन्य देशों के संविधानों का तो अध्ययन किया पर अपने ही देश की प्राचीनतम जनतांत्रिक प्रणाली की अनदेखी की। फलस्वरूप हम अपनी जड़ों से हट गए। भौतिकवाद की पश्चिमी अंधी दौड़ में सम्मिलित हो गये। नतीजा अंधकार ही अंधकार।

गत चौवन वर्षों में हमारे सत्तासीन नेतागण संविधान में लगभग एक सौ संशोधन कर चुके हैं। किसी सुन्दर परिधान में एक सौ पेबन्द लगाया जाये तो परिधान का रूप हास्यास्पद हो जायेगा। वही स्थिति संविधान की है। डा० अम्बेडकर ने कहा था कि यदि संविधान की दुर्दशा हुई तो वह प्रथम व्यक्ति होंगे जो संविधान को फूंक देंगे।

स्पष्ट है कि समय आय गया है जब हमें संविधान बदलना चाहिये। धर्म निरपेक्षता (सैक्युलरिज़्म) को स्पष्ट किया जाय। इसका अर्थ है सर्व धर्म समभाव, अर्थात् पंथों से समान व्यवहार, न कि धर्म-निरपेक्षता। आज गाँव पंचायत से लेकर संसद के चुनाव तक में भ्रष्ट उपाय अपनाकर संविधान का मनमाना अर्थ लगाना साधारण बात है।

इस विषम स्थिति से निकलने के लिये सोच समझकर मार्ग खोजना होगा। अन्धे को अन्धा लेकर चले तो दोनों कुएँ में गिरें की स्थिति से बचना है इस हेतु कुछ सुझाव यहाँ दिये जा रहे हैं। सभी इस पर गहन विचार कर मार्ग बनाये।

सौभाग्य से इस समय हमारे राष्ट्रपति के रूप में एक बहुत ही सुलझा हुआ विद्वान उपलब्ध है। उनकी सत्यनिष्ठा पर किसी को संदेह नहीं। अतः सहृदयी तानाशाह का रूप उन्हें लेना होगा। निम्नांकित उपाय किये जाये-

(1) दस वर्ष तक की अवधि तक संविधान को लंबित रखकर शासन देश और प्रदेशों में चलाया जाये।

(अ) सभी दल भंग कर दिये जाये।

(ब) कोई नया दल न बने।

(2) तुरन्त नया संविधान बनाने के लिये एक परिषद का गठन किया जाये।

(3) निम्न बातों पर विशेष ध्यान दिया जाये-

संविधान किसी दल को मान्यता न दे, इस प्रकार व चुनाव से बाहर रहें। इसका सबसे बड़ा कारण यह है कि व्यक्ति दो निष्ठाओं में बंट जाता है। एक तो वह सबकी भलाई चाहता है, दूसरे वह अपने दल की भी मजबूती चाहता है। उसकी शक्ति बंट जाती है। अतः दलविहीन ही राजनीति हो।

सत्ता के लिये केवल निष्ठावान, सत्य आचरण और जागरूक व्यक्ति ही चुने जायें। किसी प्रकार का कोई आरक्षण न किया जाय। इससे आरक्षित आलसी और कमज़ोर होता है। मुख्य धारा से कट जाता है। सभी कानून सबके लिये समान रूप से हों। चुनाव का तरीका इस प्रकार हो- सर्वप्रथम गाँव पंचायत के चुनाव हों। इससे पूर्व सभी साक्षर किये जायें। प्रत्येक मतदाता को फोटो पहचान पत्र मिले।

प्रत्येक एक हज़ार की जनसंख्या पर एक प्रतिनिधि रहे। जन साधारण उसी को प्रतिनिधि बनावें, जो ईमानदार, सत्यनिष्ठा और चरित्रवान हों। जाति और रिश्तों से ऊपर उठना होगा। यह प्रतिनिधि अपने में से

योग्यतम व्यक्ति को सरपंच, सचिव तथा तीन सदस्य चुनकर ग्राम पंचायत का गठन करेंगे। पंचायत गांव के विकास और राष्ट्र की एकता का लक्ष्य रख कर काम करेगी।

नगरों में भी इसी प्रकार नगरपालिका चुनाव होगा। जिले के मुख्यालय पर जिला परिषद का इसी प्रकार गठन होगा। वह जिले की सभी ग्राम पंचायतों और नगरपालिकाओं का मार्गदर्शन और उनकी निगरानी करेगी।

सभी जिला परिषदें मिलकर प्रदेश की परिषद का गठन करेंगी। प्रदेशों की परिषदें मिलकर देश की संसद का गठन करेंगी। देश की संसद राष्ट्रपति का अपने सदस्यों में से चुनाव करेंगी। राष्ट्रपति कार्य करने के लिये प्रधानमंत्री का चयन करेंगे और अपने सलाहकार नियुक्त करेंगे। देश जनहित में विकास और सुरक्षा उसका लक्ष्य होगा। इससे सर्वत्र सुख, शान्ति और सौहार्द फैलेगा।

उपरोक्त योजना तभी सफल होगी जब कम से कम तीन मान्य विद्वान (वेदों में पारंगत) विधान निर्माण परिषद में रहेंगे। क्योंकि वेद सदाचार को सबसे अधिक महत्व देता है। वह समाज में सुख-शान्ति और समृद्धि, सेवा भावना, सामञ्जस्य, सहयोग, सत्याचरण, सदाचार और सच्चा मनुष्य बनाने की शिक्षा देता है। वह हिन्दू, सिख, मुसलमान, ईसाई, बौद्ध, जैन बनने को नहीं मनुष्य बनने की शिक्षा देता है। सभी मनुष्य मिलजुल कर रहें सबसे सहयोग करें। सबके मित्र बनें। सबकी सेवा करें। इस प्रकार सुखी समाज बनावें।

श्रम करें, खेती करें, पसीने की कमाई का भरपूर उपभोग करें और व्यसनों से दूर रहें। बुराइयों से दूर रहे। न हम चोरी करें न संग्रह करें, सब मिल बांट कर खावें।

* * *